



आई. एस. एस. एन.: XXXX-XXXX | वर्ष: 01, अंक: 02 (सितम्बर, 2026) | <https://fffff.in>

डेयरी पशुओं में हीट स्ट्रेस का न्यूट्रिशनल मैनेजमेंट

*किरण शिंदे

पशु पोषण विभाग, आईसीएआर-आईवीआरआई इज्जतनगर, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

*संवादी लेखक का ईमेल पता: vetkiran12@gmail.com

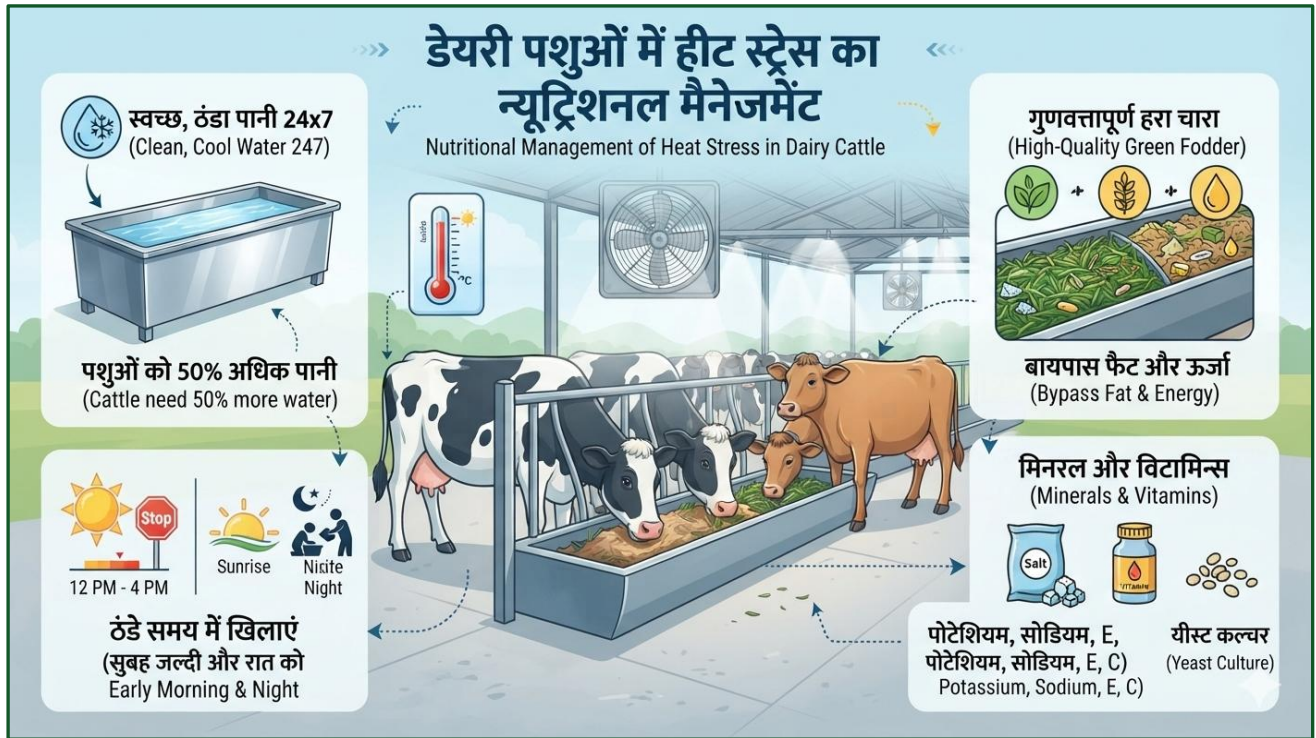
गर्म मौसम और अधिक आर्द्रता डेयरी पशुओं के स्वास्थ्य तथा उत्पादन पर प्रभाव डाल सकती हैं। अधिक दूध देने वाले पशुओं में शरीर के भीतर बनने वाली गर्मी अधिक होती है। जब पशु अपने शरीर से पर्याप्त गर्मी बाहर नहीं निकाल पाता, तब गर्मी का तनाव उत्पन्न हो सकता है। इस स्थिति में पशु का चारा खाने का व्यवहार बदल सकता है, पानी की जरूरत बढ़ सकती है और दूध उत्पादन घट सकता है। इसलिए गर्मियों में पोषण प्रबंधन को पशु के रहने के वातावरण, पानी और ठंडक की व्यवस्था के साथ जोड़ना आवश्यक है।

पानी का महत्व

गर्मी के समय साफ और पर्याप्त पानी सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है। पशु को पानी तक आसानी से पहुँच मिलनी चाहिए और पानी के बर्तन नियमित रूप से साफ किए जाने चाहिए। यदि पानी की उपलब्धता कम हो तो चारा खाने और दूध उत्पादन दोनों पर प्रभाव पड़ सकता है। पानी के स्थान ऐसे होने चाहिए जहाँ पशुओं को भीड़ न करनी पड़े। गर्मी की लहर के समय पानी की व्यवस्था की पहले से जाँच करना लाभकारी है। खनिज और लवणों की पूर्ति पशु की आवश्यकता तथा आहार की स्थिति के अनुसार की जानी चाहिए।

चारे की मात्रा और ऊर्जा

गर्मी के तनाव में पशु अक्सर कम सूखा चारा खाता है। ऐसे में कम मात्रा में खाए गए चारे से पर्याप्त पोषक तत्व उपलब्ध कराने के लिए आहार की गुणवत्ता और पोषक घनत्व पर ध्यान देना पड़ता है। उच्च गुणवत्ता वाला और आसानी से पचने वाला चारा उपयोगी हो सकता है। केवल उत्पादन बनाए रखने के लिए अचानक बहुत अधिक दाना देना उचित नहीं है, क्योंकि इससे जुगाली और पाचन तंत्र पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। आहार में पर्याप्त रेशा बनाए रखना जरूरी है।



प्रोटीन, खनिज और सुरक्षा देने वाले पोषक तत्व

आहार में प्रोटीन की कमी से उत्पादन प्रभावित हो सकता है, लेकिन आवश्यकता से बहुत अधिक प्रोटीन देना भी उचित नहीं है। इसलिए पशु की उम्र, उत्पादन और आहार की गुणवत्ता के अनुसार संतुलित आहार देना चाहिए। गर्मी के तनाव के समय शरीर में पानी और लवणों का संतुलन महत्वपूर्ण हो जाता है। कुछ विटामिन और खनिज शरीर की प्रतिरोधक क्षमता तथा ऑक्सीकरण से होने वाले नुकसान को नियंत्रित करने में भूमिका निभाते हैं। किसी भी अतिरिक्त पूरक का उपयोग पशु विशेषज्ञ की सलाह के अनुसार करना चाहिए।

चारा देने का समय

गर्मी के बहुत अधिक होने वाले समय में पशु का चारा खाने का व्यवहार कम हो सकता है। इसलिए चारा देने का बड़ा हिस्सा सुबह और शाम के अपेक्षाकृत ठंडे समय में देने की व्यवस्था उपयोगी हो सकती है। चारा ताजा और साफ होना चाहिए। लंबे समय तक पड़ा हुआ खराब या गर्म चारा पशु की रुचि कम कर सकता है। चारे की नियमित उपलब्धता और साफ बर्तन भी महत्वपूर्ण हैं।

ठंडक और पोषण का संयुक्त प्रबंधन

केवल आहार में बदलाव करके गर्मी के तनाव को पूरी तरह समाप्त नहीं किया जा सकता। छाया, हवा का आवागमन, पंखे और उपयुक्त ठंडक की व्यवस्था जरूरी है। पशु को ऐसी जगह आराम करने की सुविधा मिलनी चाहिए जहाँ हवा का प्रवाह हो। अधिक दूध देने वाले पशुओं पर विशेष निगरानी रखनी चाहिए। दूध की मात्रा, चारा खाने की मात्रा, पानी पीने और व्यवहार में बदलाव प्रारंभिक संकेत दे सकते हैं।

व्यावहारिक योजना

गर्मी शुरू होने से पहले पानी के बर्तनों, छाया, पंखों और हवा के आवागमन की जाँच कर लेनी चाहिए। आहार की समीक्षा करके यह देखना चाहिए कि उसमें ऊर्जा, प्रोटीन, रेशा और खनिज संतुलित मात्रा में हैं या नहीं। आहार में अचानक परिवर्तन नहीं करना चाहिए। कोई भी विशेष पूरक केवल स्पष्ट आवश्यकता होने पर और उचित मात्रा में दिया जाना चाहिए। स्थानीय रूप से उपलब्ध अच्छे चारे का वैज्ञानिक ढंग से उपयोग आर्थिक रूप से भी लाभकारी हो सकता है।

निष्कर्ष

डेयरी पशुओं में गर्मी के तनाव का पोषण प्रबंधन एक संयुक्त प्रक्रिया है। पर्याप्त पानी, संतुलित आहार, उचित रेशा, खनिजों का संतुलन और आवश्यकतानुसार पूरक आहार महत्वपूर्ण हैं। इन उपायों के साथ छाया, हवा और ठंडक की व्यवस्था की जाए तो गर्मी के कारण होने वाले उत्पादन नुकसान को कम करने में सहायता मिल सकती है।